ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 371-374
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

अलग–अलग क्षेत्रों के प्रोफेशनल छात्रों में डिप्रेशन

डॉ0 संजीव कुमार गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर– (शारीरिक शिक्षा) राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी, महोबा (उ0प्र0), भारत

Received-20.10.2023, Revised-29.10.2023, Accepted-07.11.2023 E-mail: Sanjeevgupta.gdc@gmail.com

सारांशः ***स्टडी का मकसद अलग–अलग एरिया के प्रोफेशनल स्टूडेंट्स में डिप्रेशन का पता लगाना और उनकी तुलना करना था। स्टडी के मकसद से, अलग–अलग एरिया के 150 प्रोफेशनल स्टूडेंट्स (50 मेडिकल स्टूडेंट्स, 50 इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और 50 फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स) को स्ट्रेटिफाइड रैंडम सैंपलिंग के आधार पर रैंडम तरीके से चुना गया। सब्जेक्ट्स बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से चुने गए थे। सब्जेक्ट्स की उम्र 18 से 25 साल के बीच थी। फिजीबिलिटी क्राइटेरिया को ध्यान में रखते हुए, डिप्रेशन वर्तमान अध्ययन के लिए चर का चयन किया गया।***

डिप्रेशन का आकलन इवान गोल्डबर्ग द्वारा बनाए और स्टैंडर्ड किए गए गोल्डबर्ग डिप्रेशन प्रश्नावली (GDQ) की मदद से किया गया।

अलग–अलग एरिया के प्रोफेशनल स्टूडेंट्स में डिप्रेशन के लेवल को जांचने और कम्पेयर करने के लिए, डिस्क्रिप्टिव स्टेटिस्टिक्स यानी (मीन, स्टैंडर्ड डेविएशन) और एनालिसिस ऑफ वेरियंस (ANOVA) का इस्तेमाल किया गया। सिग्निफिकेंस का लेवल 0.05 पर सेट किया गया था। डिप्रेशन के मामले में मेडिकल स्टूडेंट्स, इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के बीच सिग्निफिकेंट अंतर पाया गया। फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स, मेडिकल स्टूडेंट्स और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स की तुलना में उनमें ज्यादा डिप्रेशन था। डिप्रेशन के मामले में मेडिकल स्टूडेंट्स और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्सय मेडिकल स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्सय इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के बीच बड़ा अंतर पाया गया और डिप्रेशन के संबंध में फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स झ मेडिकल स्टूडेंट्स झ इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के परफॉरमेंस का देखा गया क्रम पाया गया।

कुंजीभूत शब्द– डिप्रेशन, यूनिपोलर और इंट्रासाइकिल, प्रोफेशनल स्टूडेंट्स, मेडिकल स्टूडेंट्स, इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स, एिजुकेशन।

हर कोई कभी–कभी उदास या दुखी महसूस करता है, लेकिन ये भावनाएं आमतौर पर कुछ समय के लिए होती हैं और कुछ दिनों में चली जाती हैं। जब किसी व्यक्ति को डिप्रेशन होता है, तो यह रोजमर्रा की जिंदगी, नॉर्मल कामकाज में रुकावट डालता है, और इस डिसऑर्डर वाले व्यक्ति और उसकी देखभाल करने वालों, दोनों को दर्द देता है। डिप्रेशन एक आम लेकिन गंभीर बीमारी है, और ज्यादातर लोग इसका अनुभव करते हैं।

इसे ठीक होने के लिए इलाज की जरूरत होती है। डिप्रेशन वाली बीमारी वाले बहुत से लोग कभी इलाज नहीं करवाते। लेकिन ज्यादातर लोग, यहाँ तक कि बहुत ज्यादा डिप्रेशन वाले लोग भी, इलाज से ठीक हो सकते हैं। इस बीमारी पर गहरी रिसर्च के नतीजे में इस कमजोर करने वाली बीमारी से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए दवाएं, साइकोथेरेपी और दूसरे तरीके डेवलप हुए हैं। डिप्रेशन हमारे समय की मानसिक कमजोरी है। पिछले दस सालों में दुनिया भर में डिप्रेशन में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन की एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, 1990 में दुनिया भर में कमजोरी का सबसे बड़ा कारण यूनिपोलर मेजर डिप्रेशन था। यूनाइटेड स्टेट्स में किसी भी दूसरी मानसिक बीमारी के मुकाबले ज्यादा लोग डिप्रेशन के लिए हॉस्पिटल में भर्ती होते हैं। हमारे समाज में मुश्किल समस्याओं के आसान हल खोजने की चाहत में, डिप्रेशन को मुख्य :प से एक बायोकेमिकल बीमारी माना जाता था जिसका मेडिकल इलाज किया जाना था। इस तरह इस मुश्किल हालत को, इसके सभी इमोशनल, साइकोलॉजिकल, कल्चरल और बायोलॉजिकल एलीमेंट्स के साथ, जिंदगी की घटनाओं और इंसानी हालात से अलग कर दिया गया और इसे एक जेनेटिक कमी बना दिया गया। इतने सालों में, इस रहस्यमयी और अनप्रेडिक्टेबल हालत के हल की तलाश में, इलाज के तरीकों में कई बदलाव हुए हैं।

उस समय के थेराप्यूटिक ट्रेंड्स और माहौल को दिखाते हुए, शुरुआती फ्रायडियन मॉडल्स ने दबे हुए गुस्से और बचपन की कमी और नुकसान से जुड़े इंट्रासाइकिल कारणों को देखा। डिप्रेशन के लक्षणों को अनजाने में होने वाले झगड़ों का नतीजा माना जाता था, जिसमें ट्रांसफर रिलेशनशिप इलाज का एक अहम हिस्सा था। फ्रायडियन तरीके में सबसे नया डेवलपमेंट एक टाइम–लिमिटेड साइकोडायनामिक थेरेपी है, जो बदलते पर्सनैलिटी और कैरेक्टर स्ट्रक्चर पर आधारित एक ट्रेनिंग मैनुअल में पब्लिश हुई है। सदी के बीच में, टाइम–लिमिटेड शॉर्ट–टर्म तरीके के चलन में आए, जैसे कॉग्निटिव, बिहेवियरल और इंटरपर्सनल थेरेपी।

बिहेवियरल अप्रोच यह मानता है कि डिप्रेशन, अलगाव, मौत या अचानक माहौल में बदलाव की वजह से पॉजिटिव रीइन्फोर्समेंट की कमी से होता है। सेल्फ मॉनिटरिंग और सेल्फ रीइन्फोर्समेंट जैसी बिहेवियरल तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। जैक्सन ने डिप्रेशन डिसऑर्डर के इतिहास के बारे में डिटेल में बताया है। डिप्रेशन का अनुभव इंसानों को तब से परेशान करता रहा है जब से इंसानी अनुभव का शुरुआती डॉक्यूमेंटेशन हुआ है।

डिप्रेशन के बारे में पुराने ग्रीक ब्योरे में मेलानकोलिया सिंड्रोम का जिक्र था, जिसका ग्रीक में मतलब है काला बाइल। ह्यूमरल थ्योरी में, काले बाइल को मेलानकोलिया का एक एटिओलॉजिक फैक्टर माना जाता था। इस ग्रीक परंपरा में मेलानकोलिक स्वभाव का जिक्र था।

जो कि प्रारंभिक अवस्था में होने वाली डिस्टीमिक स्थितियों या अवसादग्रस्त व्यक्तित्व के बारे में हमारी समझ के समान है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

19वीं सदी के आखिर और 20वीं सदी की शुरुआत में, फेनोमेनोलॉजिस्ट ने मेलानकोलिया के क्लिनिकल सिंड्रोम के लिए डिप्रेशन या मेंटल डिप्रेशन शब्द का इस्तेमाल तेजी से किया।

अध्ययन के उद्देश्य– अलग–अलग एरिया के प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के बीच डिप्रेशन का आकलन और तुलना करना।

परिकल्पना– यह अनुमान लगाया गया था कि डिप्रेशन के संबंध में प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के बीच कोई खास अंतर नहीं होगा।

प्रक्रिया और कार्यप्रणाली– स्टडी के मकसद से, अलग–अलग एरिया के 150 प्रोफेशनल स्टूडेंट्स (50 मेडिकल स्टूडेंट्स, 50 इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और 50 फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स) को स्ट्रेटिफाइड रैंडम सैंपलिंग के आधार पर रैंडम तरीके से चुना गया। सब्जेक्ट्स बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से चुने गए थे। सब्जेक्ट्स की उम्र 18 से 25 साल के बीच थी। फिजीबिलिटी क्राइटेरिया को ध्यान में रखते हुए, इस स्टडी के लिए डिप्रेशन वेरिएबल को चुना गया। डिप्रेशन का असेसमेंट इवान गोल्डबर्ग द्वारा बनाए और स्टैंडर्ड किए गए गोल्डबर्ग डिप्रेशन क्वेश्नेयर (ळक्फ) की मदद से किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण– विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवर छात्रों में अवसाद के स्तर का आकलन करने के लिए, वर्णनात्मक सांख्यिकी यानी (मीन, स्टैंडर्ड डेविएशन) का इस्तेमाल किया गया। अलग–अलग एरिया के प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के बीच डिप्रेशन की तुलना करने के लिए, एनालिसिस ऑफ वेरियंस (।छव्ट।) का इस्तेमाल किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष– अलग–अलग एरिया के 150 प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के डिस्क्रिप्टिव स्टेटिस्टिक्स, वन वे एनालिसिस ऑफ वेरियंस (ANOVA) और डिप्रेशन वेरिएबल के लिए पोस्ट हॉक टेस्ट से जुड़े नतीजे टेबल नंबर 1 से 3 में दिए गए हैं।

तालिका नंबर एक

डिप्रेशन के संबंध में अलग–अलग एरिया के प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के डिस्क्रिप्टिव स्टेटिस्टिक्स

विवरण	चिकित्सा छात्र	इंजीनियरिंग छात्र
मीन	15-74	Dec-44
मीडियन	11-May	09-May
स्टैण्डर्ड डेविएशन	12-25713	9-95328
सेंट देव	1-73342	1-40761
कर्टोसिस	4-986	0-86
स्क्यूनेस	1-923	1-066
रैंज	62	43
मिनिमम	0	0

टेबल–1 से साफ है कि डिप्रेशन के संबंध में मेडिकल स्टूडेंट्स, इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के मीन और स्टैंडर्ड डेविएशन स्कोर क्रमशः 15.74, 12.44 और 19.26 और 12.25, 9.95 और 12.17 पाए गए हैं और स्कोर की रेंज क्रमशः 62, 43 और 49 थी, जबकि स्टैंडर्ड एरर क्रमशः 1.73, 1.40 और 1.72 पाई गई।

तालिका–2

डिप्रेशन के संबंध में अलग–अलग एरिया के प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के अंतर का एनालिसिस

माध्य भिन्नता का स्त्रोत	वर्ग का योग	MS
बीच में	1163.21	581.6
अंदर	19477.56	132.5

0.05 महत्व स्तर पर महत्वपूर्ण F 0.05 (2, 147) = 3.06

तालिका–2 से पता चला कि डिप्रेशन के संबंध में मेडिकल छात्रों, इंजीनियरिंग छात्रों और शारीरिक शिक्षा छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अंतर था, क्योंकि प्राप्त एफ–अनुपात 4.38 था, जो कि (2, 147) स्वतंत्रता की डिग्री के साथ 0.05 के स्तर पर एफ–अनुपात के महत्वपूर्ण होने के लिए आवश्यक सारणीबद्ध मूल्य 3.06 से अधिक था।

क्योंकि डिप्रेशन के संबंध में एकतरफा विचरण विश्लेषण महत्वपूर्ण पाया गया, इसलिए मेडिकल छात्रों, इंजीनियरिंग छात्रों और शारीरिक शिक्षा छात्रों के बीच युग्मित माध्य के अंतर का पता लगाने के लिए सबसे कम महत्वपूर्ण अंतर (स्चै) परीक्षण लागू किया गया।

टेबल तीन

मेडिकल स्टूडेंट्स, इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के बीच पेयर्ड मीन्स के लिए लीस्ट सिग्निफिकेंट डिफरेंस पोस्ट हॉक टेस्ट

चिकित्सा छात्र	इंजीनियरिंग छात्र	भौतिक शिक्षा छात्र
15-74	Dec-44	
15-74		19-26

0.05 महत्व स्तर पर महत्वपूर्ण

टेबल–3 से यह साफ है कि डिप्रेशन के संबंध में मेडिकल स्टूडेंट्स, इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के बीच पेयर्ड मीन डिफरेंसः मेडिकल छात्रों और इंजीनियरिंग छात्रोंय मेडिकल छात्रों और शारीरिक शिक्षा छात्रोंय इंजीनियरिंग छात्रों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

और शारीरिक शिक्षा छात्रों के बीच महत्वपूर्ण पाया गया।

डिप्रेशन के संबंध में मेडिकल स्टूडेंट्स, इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के बीच औसत का ग्राफिकल रिप्रेजेंटेशन फिगर नंबर 1 में दिखाया गया है।

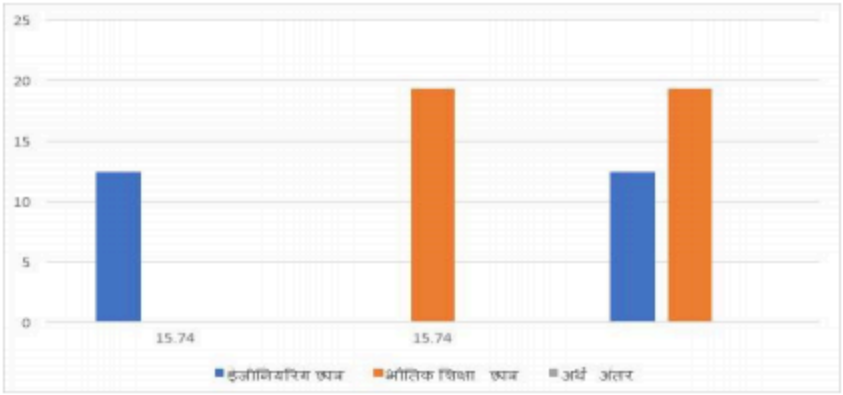

चित्र 1: अलग–अलग देशों के प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के मीन्स की तुलना का ग्राफिकल रिप्रेजेंटेशन डिप्रेशन से संबंधित क्षेत्र

चर्चा और निष्कर्ष– स्टडी के नतीजों से पता चला कि मेडिकल स्टूडेंट्स के बीच बड़ा अंतर पाया गया, इंजीनियरिंग छात्र और शारीरिक शिक्षा डिप्रेशन के संबंध में छात्र जबकि शारीरिक एजुकेशन स्टूडेंट्स में मेडिकल स्टूडेंट्स और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के मुकाबले ज्यादा डिप्रेशन था। इन नतीजों का कारण यह हो सकता है कि डिप्रेशन आम तौर पर बहुत ज्यादा उदासी की मानसिक स्थिति को बताता है, जिसमें लगातार मूड खराब रहना, खुशी और दिलचस्पी खोना शामिल है।

शायद डिप्रेशन का ज्यादा स्कोर उन स्पोर्ट्समैन की वजह से हो सकता है जिन्हें स्टडी के लिए चुना गया था, जिन्होंने पहले ही अपनी सबसे ऊँची कामयाबी हासिल कर ली है। वे अपने करियर प्रॉस्पेक्टस को लेकर परेशान हैं, शायद करियर चुनने में कन्यूजन की वजह से उनमें फेलियर की फीलिंग आई होगी, इसके अलावा उन्हें यह भी लग सकता है कि स्पोर्ट्स पार्टिसिपेशन ने उनके करियर में कोई मदद नहीं की है, इसलिए उनका डिप्रेशन में स्कोर ज्यादा है, जबकि मेडिकल और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स (नॉन–स्पोर्ट्स पर्सन) के पास अपने प्रोफेशन के लिए क्लियर रास्ता या करियर ऑप्शन होता है। इसलिए वे प्रोफेशनली ज्यादा सिक्योर महसूस कर सकते हैं।

इसके अलावा, डिप्रेशन के मामले में मेडिकल स्टूडेंट्स और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्सय मेडिकल स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्सय इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के बीच काफी अंतर पाया गया और डिप्रेशन के संबंध में परफॉरमेंस का देखा गया क्रम फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स झ मेडिकल स्टूडेंट्स झ इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स अपने भविष्य के करियर की संभावनाओं और कोर्स के दौरान ग्रेड को लेकर चिंतित रहते हैं, जिससे मेडिकल स्टूडेंट्स और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स की तुलना में उनमें डिप्रेशन की प्रवृत्ति होती है। यह हाइपोथीसिस कि डिप्रेशन के संबंध में प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के बीच कोई खास अंतर नहीं होगा, खारिज कर दी गई क्योंकि डिप्रेशन के संबंध में प्रोफेशनल स्टूडेंट्स के बीच काफी अंतर पाया गया था।

निष्कर्ष– डिप्रेशन के मामले में मेडिकल स्टूडेंट्स, इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के बीच काफी अंतर पाया गया। फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स में मेडिकल स्टूडेंट्स और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के मुकाबले ज्यादा डिप्रेशन था। डिप्रेशन के मामले में मेडिकल स्टूडेंट्स और इंजीनियरिंग स्टूडेंट्सय मेडिकल स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्सय इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स और फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स के बीच काफी अंतर पाया गया और डिप्रेशन के मामले में परफॉरमेंस का देखा गया सीक्वेंस फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स झ मेडिकल स्टूडेंट्स झ इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इन्ग्राम, आर. ई., मिरांडा, जे. और सेगल, जे. डी. (1998): डिप्रेशन के प्रति कॉग्निटिव वल्नरेबिलिटी। न्यूयॉर्क: गिलफोर्ड प्रेस।
2. जैकसन, एस. डब्लू. (1986): मेलानकोलिया और डिप्रेशन। नया स्वर्ग, येल विश्वविद्यालय प्रेस।
3. सेलिगमैन, एम. ई. पी., वॉकर, ई. एफ. और रोसेनहन, डी. एल. (1982): एबनॉर्मल साइकोलॉजी। न्यूयॉर्क: नॉर्टन एंड कंपनी, इंक.।
4. स्ट्रप, एच. एच. और बाइडर, जेसी (1984): साइकोथेरेपी इन ए न्यू की: ए गाइड टू टाइम–लिमिटेड डायनामिक साइकोथेरेपी। न्यूयॉर्क बेसिक बुक्स।
5. एंड्रयूज बी., हेजडेनबर्ग जे. और वाइल्डिंग जे. (2009): स्टूडेंट एंजायटी और डिप्रेशन: क्वेश्नेयर और इंटरव्यू असेसमेंट की तुलना। जर्नल ऑफ अफेक्टिव डिसऑर्डर, खंड 95, अंक 1, पृष्ठ 29–34।
6. बैबिस, डै और गैंगविश, श्र्म (2009): किशोरों में डिप्रेशन और आत्महत्या के विचारों के खिलाफ एक सुरक्षा कारक के :प में खेल में भाग लेना, आत्म–सम्मान और सामाजिक समर्थन द्वारा मध्यस्थता। जर्नल विकासात्मक और व्यावहारिक बाल रोग, 30(5). 376–384।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

7. बयाराम नूरन और बिलगेल नाजान (2008): यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स के एक ग्रुप में डिप्रेशन, एंजायटी और स्ट्रेस का फैलाव और सोशियो–डेमोग्राफिक कोरिलेशन। सोशल साइकियाट्री एंड साइकियाट्रिक एपिडेमियोलॉजी, वॉल्यूम 43, नंबर 8, पेज 667–672।
8. बीकमैन, ए. टी., डी. ई., बी. ई., वैन, बी. ए., डीग, डी. जे., वैन–डिक, आर. और वैन, टी. डब्लू. (2000): बाद के जीवन में चिंता और अवसादः जोखिम कारकों की सह–घटना और सामुदायिकता। जर्नल ऑफ अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन, 157(8), 89–95।
9. बूलेंजर, जेपी, हर्मीस, ए., ह्यूसोम, एके और व्हीलर, ई. (2010): गंभीर डिप्रेशन वाले मरीजों में SSRI ट्रीटमेंट के नतीजे पर बेसलाइन एंजायटी का असरः एस्सिटालोप्राम बनाम पैरोक्सेटीन। जर्नल ऑफ करंट मेडिकल रिसर्च ओपिनियन, 26(3), 605–614।
10. बुनेविसियस एडोमास, कटकूटे अरुण और बुनेविसियस रॉबर्ट्स (2008): मेडिकल स्टूडेंट्स और ह्यूमैनिटीज स्टूडेंट्स में एंजायटी और डिप्रेशन के लक्षणः बिग–फाइव पर्सनैलिटी डाइमेंशन्स और स्ट्रेस के प्रति वल्नरेबिलिटी के साथ संबंध। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइकियाट्री, वॉल्यूम 54, नंबर 6, 494–501।
11. डेली, ई. जे., त्रिवेदी, एम. एच., विस्नीवस्की, एस. आर., नीरेनबर्ग, ए. ए., गेनेस, बी. एन. एवं वार्डन, डी. (2010): डिप्रेशन में स्वास्थ्य–संबंधी जीवन की गुणवत्ताः एक व्यवस्थित रिपोर्ट। एनाल्स ऑफ क्लिनिकल साइकियाट्री, 22(1), 43–55।
12. देसाई, एच. डी. और जैन, एम. डब्लू. (2000): महिलाओं में मेजर डिप्रेशनः लिटरेचर की समीक्षा। जर्नल ऑफ अमेरिकन फार्मासिस्ट एसोसिएशन, 40(4), 525–537।
13. डिक्सन सारा के. और कुर्रपियस शेरोन ई. रॉबिन्सन (2008): बच्चों में अवसाद और कॉलेज का तनावः विश्वविद्यालय के स्नातकः क्या मायने रखना और आत्म–सम्मान कोई फर्क लाते हैं। जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट डेवलपमेंट, खंड 49, अंक 5, पृ. 412–424।
14. आइगन, ए. एम. और हचिसन, ई. के. (2005): मेजर डिप्रेसिव डिसऑर्डर का इतिहास और तनाव पर प्रतिक्रिया। जर्नल ऑफ अफेक्टिव डिसऑर्डर, 86(2), 143–150।
15. जोसेफिन जीडब्ल्यूएस वोंग एट अल. (2006): ष्हांगकांग में पहले साल के टर्शियरी एजुकेशन स्टूडेंट्स में डिप्रेशन, एंजायटी और स्ट्रेस का वेब–बेस्ड सर्वे। ऑस्ट्रेलियन एंड न्यूजीलैंड जर्नल ऑफ साइकियाट्री, वॉल्यूम 40, इश्यू 9, पेज 777 – 782।
16. खान मुहम्मद एस.य महमूद साजिदय बादशाह आरिफय अली सैयद यू.य और जमाल यासिरय (2006): कराची, पाकिस्तान में मेडिकल स्टूडेंट्स में डिप्रेशन, एंजायटी और उनसे जुड़े फैक्टर्स का फैलाव। जर्नल ऑफ पाकिस्तान एसोसिएशन, 2006, वॉल्यूम 56, नंबर 012, पेज 583–586।
17. लिस्मान, ज्स और बोहेनलेन, श्रज्ञ (2001): डिप्रेशन के बारे में इंटरनेट जानकारी की एक क्रिटिकल समीक्षा। जर्नल ऑफ अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन, 52(2), 1046–1050।
18. रब एफ., ममदी आर. और नासिर एस. (2008): पाकिस्तान में महिला मेडिकल छात्रों में अवसाद और चिंता की दर। ईस्ट मेडिटेरेनियन हेल्थ जे., वॉल्यूम 14(1): 126–33।
19. सेगल, ZV और इन्ग्राम, RE (1994): यूनिपोलर डिप्रेशन के लिए कॉग्निटिव वल्नरेबिलिटी के टेस्ट में मूड प्राइमिंग और कंस्ट्रक्ट एक्टिवेशन। क्लिनिकल साइकोलॉजी रिव्यू, 14(7), 663–695।
20. डिप्रेशन नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ (दक): 2008 में http%//www-nimh-nih-gov/health/publications/depression/poisondepression-pdf से लिया गया।

*****